IJESRR International Journal of Education and Scientific Research Review
E-ISSN: 2348 - 6457
P-ISSN: 2349 - 1817
Email:-Info@ijesrr.org October 2021 www.ijesrr.org

आरक्षित एवं अनारक्षित शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का संक्षिप्त विश्लेषण

श्रीमती क्षमा रस्तौगी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
आई0आई0एम0टी0 विश्वविधालय गंगानगर मेरठ

सारः–
जीवन के सभी कार्य सौद्देश्य होते हैं। उद्देश्य के बिना जीवन दिशाहीन हो जाता है। शोध का उद्देश्य शोधकार्य का प्रकाश स्तम्भ है जो उसे राह से विचलित होने से बचाकर सही मार्ग दिखाता है। किसी भी कार्य की सफलता उसके निर्धारित उद्देश्यों में छिपी होती है। मनुष्य के प्रत्येक कार्य के पीछे विशिष्ट लक्ष्य होता है जो कार्य के सफलतापूर्वक संचालन में सहायक होता है। इस शोध पेपर का उद्देश्य आरक्षित एवं अनारक्षित शिक्षकों में व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। "शिक्षा वर्तमान में भविष्य के लिए निवेश है।" इस निवेश का निर्णायक घटक शिक्षक है। शिक्षक राष्ट्र निर्माता है तथा बालक देश के भावी कर्णधार है। शिक्षक का व्यक्तित्व, शिक्षक का दायित्व, मूल्य प्रेरणा सभी कुछ विद्यार्थियों पर चुम्बकीय प्रभाव डालते है। अतः उसका अपने व्यवसाय के प्रति संतुष्ट होना आवश्यक है तभी वह राष्ट्र की उन्नति में सहायक हो सकते है। व्यावसायिक संतुष्टि जहां व्यक्ति को सुखी जीवन प्रदान करती है। वहाँ समाज हित भी करती है। व्यवसाय के प्रति रूचि, उससे होने वाली आय की पर्याप्तता भावी उन्नति के आधार व्यवसाय की सामाजिक प्रतिष्ठा आदि अनेक तत्व व्यावसायिक संतुष्टि का निर्धारण करते है। वैसे तो शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षकों के दायित्वबोध एवं व्यवसायिक संतुष्टि आवश्यक है परन्तु उच्च प्राथमिक स्तर पर इनकी महत्ता बढ़ जाती है क्योंकि इस स्तर पर शिक्षा में अनेक प्रकार की चुनौतियाँ आती है जो विद्यालय, परिवार अथवा समाज से सम्बन्धित हो सकती है। इन चुनौतियों के निराकरण में शिक्षक की अहम भूमिका होती है, वही शिक्षक इनका निराकरण/समाधान कर सकता है जो अपने दायित्वबोध को भलीभाँति समझता हो तथा अपने व्यवसाय से संतुष्ट रहते हुए अपनी मानसिक परिस्थितियों को नियंत्रण में रखने की सामर्थता रखता हो।

प्रस्तावनाः–
शिक्षा बालक के जन्म से लेकर मृत्यु तक अनवरत् चलने वाली वह प्रक्रिया है जिसके अभाव में व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र का विकास सम्भव नहीं है। किसी भी समाज अथवा व्यक्ति में यदि परिवर्तन दिखता है तो निश्चित रूप से वह शिक्षा का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष परिणाम होता है। आदिकाल से लेकर आज तक लगभग सभी विद्वतजनों का यह मानना है कि यदि व्यक्ति अथवा समाज या फिर राष्ट्र में सकारात्मक परिवर्तन लाना है तो उसकी शिक्षा को बदलना होगा क्योंकि इसके अभाव में किसी भी क्षेत्र में परिवर्तन लाना असम्भव नहीं, तो कठिन अवश्य है। शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन लाने के लिए शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि एक विज्ञ शिक्षक ही शिक्षण व्यवस्था की सकारात्मक दिशा में परिवर्तन ला सकता है इसलिए शिक्षक से जुड़े हुए सभी कारक शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करते हैं। व्यावसायिक संतुष्टि शिक्षक की मनोदशा को दर्शाती है जो उसे कार्य से जुड़ने अथवा कार्य से विमुख

होने की ओर ले जाती है। इसलिए शिक्षण व्यवस्था के उत्थान के लिए शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि स्तर का उच्च होना परमावश्यक है। आमतौर पर देखा गया है कि जिन शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि निम्न होती है वे शिक्षक शिक्षण व्यवस्था में अपना योगदान तुलनात्मक रूप से कम दे पाते हैं जबकि इसके विपरीत उनका योगदान अधिक देखा गया है। आज देश के समस्त शिक्षणदायी संस्थाओं को अथवा सरकार को यह चाहिए कि शिक्षा से जुड़े शिक्षक एवं शिक्षामित्रों दोनों की व्यावसायिक संतुष्टि को उच्च रखने हेतु भागीरथी प्रयास किए जाएँ जिससे व्यवस्था में परिवर्तन आ सके। शिक्षा में व्यावसायिक संतुष्टि के पीछे शिक्षकों कि वह मनोदशा शामिल है जो उन्हें अपनी कृति के पारिश्रमिक के रूप में या फिर सरकार द्वारा मिलने वाली सुख–सुविधाओं के रूप में देखा जाता है क्योंकि व्यावसायिक संतुष्टि का सीधा सम्बन्ध शिक्षकों के उस वेतनमान से है जो उन्हें वर्तमान समय में मिल रहा है।

समस्या कथन

विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन।

अध्ययन के उदेश्यः–

कला एवं विज्ञान वर्ग के विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायेः–

समस्या के निर्धारण के पश्चात् समस्या के संभावित समाधान को खोजना ही परिकल्पना कहलाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है।

- कला एवं विज्ञान वर्ग के बी0टी0सी0 शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कई सार्थक अन्तर नही है।
- आरक्षित व अनारक्षित शिक्षको की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

संबंधित सहित्य का सर्वेक्षणः–

संबंधित सहित्य का सर्वेक्षण शोधकर्ता की समस्या के चयन एवं परिसीमन में सहायता प्रदान करता है अनुसंधान की पुनरावृत्ति से बचाता है। अतः समस्या के मूल में पहुँचने के लिए संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

संबंधित साहित्य के अध्ययन की आवश्यकताः–

इसके अन्तर्गत उनपत्र–पत्रिकाओं,पुस्तकों प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों का अध्ययन किया गया है जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से समस्या से संबंधित है।

शोध प्रविधिः–

प्राथमिक विधालयों में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षको की व्यावसायिक संतुष्टि के संबंध मे यह जानने के लिए किया गया कि उनमें विषय वर्ग तथा जातीय आधार पर कोई संबंध है अथवा नही।

न्यादर्शः–

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श ''स्ट्रटीफाईड रैन्डम सैम्पलिंग'' विधि द्वारा जनपद मेरठ मे प्राथमिक विधालयों में शिक्षक के रूप में कार्यरत 55 बी0टी0सी0 शिक्षकों पर किया गया।

तालिका–1

विषय के आधार पर चयनित न्यादर्श का विवरण

क्र0सं0	विषय	योग
1	कला	24
2	विज्ञान	31
3	योग	55

समस्या के विशिष्ट स्वरूप को दृष्टिगत रखते हुए डा0 मीरा दिक्षित द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत व्यावसायिक संतुष्टि मापन यन्त्र जॉब सेटिसफेक्शन इन्सट्रूमेन्ट नामक अभिवृति मापनी एटीटयूड स्केल का प्रयोग किया गया है इसमें कुल 52 कथन है जिनमें सकारात्मक एवं नकारात्मक कथन

यादृन्छिक रूप से व्यवस्थित है।

मापनी में दिये गये कथनों के उत्तर लिकर्ट के पाँच बिन्दु पैमानां के आधार पर पाँच समान भागों में बाँटे गये है।

- अधिक असहमत
- असहमत
- सामान्य सहमत
- सहमत
- अधिक सहमत परीक्षण का प्रशासनः

चयनित शिक्षकों से व्यक्तिगत सम्पर्क कर अपने अध्ययन का उददेश्य बताया और सहयोग प्रदान करने हेतु निवेदन किया।

परीक्षण का फलांकन–

परीक्षण के प्रशासन के उपरान्त संकलित प्रपत्रो का फलांकन किया गया। अंक देने की प्रकिया इसी प्रकार दर्शायी गयी है।

तालिका–2
परीक्षण की फलांकन की विधि

क0सं0	प्रतिकिया	सकारात्मक कथन हेतु अंक	नकारात्क कथन हेतु अंक
1	अधिक असहमत	01	05
2	असहमत	02	04
3	सामान्य	03	03
4	सहमत	04	02
5	अधिक सहमत	05	01

तालिका–3
प्रदत विश्लेषण एवं व्याख्याः–कला एवं विज्ञान वर्ग के विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि

क्रम सं0	वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	''टी'' मान
1	कला	137	18.352	0.2340
2	विज्ञान	143	19.795	

स्पष्ट है कि कला एवं विज्ञान वर्ग के विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नही है

तालिका–4
आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि

कम सं0	वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	''टी'' मान
1	आरक्षित	147	21.489	2.4546
2	अनारक्षित	134	11.437	

इससे स्पष्ट होता है आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर है।

अध्ययन के निष्कर्षः–

कला एवं विज्ञान वर्ग के विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर नही पाया गया। दोनो वर्ग के शिक्षकों की संतुष्टि अच्छे स्तर पर पायी गयी।

आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। आरक्षित वर्ग के शिक्षक अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षा व्यवसाय से अधिक संतुष्ट है।

अध्ययन के आधार पर पाया गया कि प्राथमिक विधालयों में आवागमन की सुविधायें, जटिल कार्य दशायें, बढते हुए शिक्षणोत्तर दायित्व जैसे–जनगणना, मतगणना, चुनाव, पल्स पोलियो अभियान, मध्यान्ह भोजन,स्थानीय परिस्थितियां आदि वे महत्वपूर्ण कारक है जिनके कारण अध्यापकों में व्यावसायिक संतुष्टि को होना पाया गया चाहे वे कला वर्ग के हो या विज्ञान वर्ग के चाहे आरक्षित हो या अनारक्षित।

आवश्यक है कि विशिष्ट बी0टी0सी0 के शिक्षकों के व्यावसायिक संतुष्टि को उच्च्तर बनाया जाये उन्हे प्रोन्नति के अच्छे अवसर प्रदान किये जाये जिससे वे अपना पूरा समय शिक्षण कार्य में ही लगा सके।

सारांश–

यह आमधारणा समाज के हर वर्ग में दे खने को मिलती है कि अधिक वेतनमान अधिक व्यावसायिक संतुष्टि। परन्तु आज भी प्राथमिक शिक्षा से जुड़े हुए लोग जो इसे व्यवसाय अथवा वृत्त ना मानकर इसे समाज सेवा की २ष्टि से देखते हैं ऐसे विद्वतजनों को जानने के लिए शोधार्थिनी ने उक्त विषय का चयन किया है साथ ही उक्त धारणा को समझना आवश्यक मानती है यद्यपि इस क्षेत्र में बहुत सारे शोधकर्ताओं ने शोधकार्य किया और परिणाम भी प्राप्त

किया है परन्तु किसी ने भी दो ऐसे चरों के मध्य अन्तर जानने का प्रयास नहीं किया है जो एक दूसरे में चयन और वेतनमान दोनों में भिन्न हैं इसीलिए यह विषय शोध के लिए काफी व्यवहारपरक बन जाता है यही इस शोधपत्र का औचित्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- जैन, डी0 (1999) शिक्षा का गिरता स्तर, दोषी कौन, प्राइमरी शिक्षक, जनवरी 99 नई दिल्ली : एन0सी0ई0आर0टी0।
- कपिल एच0के0 (1995) अनुसंधान विधियों आगरा : हर प्रसाद भार्गव बुक हाउस।
- सिंह के0 (2003) भारत मे शिक्षा व्यवस्था का विकास, लखीमपुरखीरी : गोविन्द प्रकाशन।
- चौपड़ा, आर.के. (1982) "विश्वविद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि व विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पति के संबंध में स्कूलों के संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन" पीएच.डी. एज्युकेशन, आगरा यू.।
- हेनरी, ई. गेरेट (2010), "शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग", लुधियानाः कल्याणी पब्जिशर्स।
- कपिल, एच.के. (1992) "अनुसंधान विधियाँ" आगराः हरिप्रसाद भार्गव कचहरी घाट ।
- राम मोहन बाबू, वी. (1992) "जॉब सेटिस्फेक्शन एटीट्यूड टूवर्ड टींचिग जॉव इन्वाल्वमेन्ट, इफिसियेंसी टीचिंग एण्ड परसेप्शन ऑफ ऑर्गनाईजेशनल क्लाइमेट ऑफ टीचर्स रेजिडैंसियल एण्ड नॉन रेजिडेंसियल स्कूल्स" फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल्स रिसर्च।